क्या धर्मी मृतक सीधे स्वर्ग जाएंगे?

एक बच्चा रोते हुए मुंह उठाकर पूछता है, ''मेरी मम्मी कहां है?'' आप उसे बाहों में लेकर भरे हुए गले से जवाब देते हैं, ''वह स्वर्ग में है।'' आप सफेद बालों वाली एक संत घोषित स्त्री के पास जाते हैं, जो हाल ही में विधवा हुई है। आप उससे उसके पति के अंतिम दिनों के कष्ट की बातें करते हैं। उसके कंधे पर हाथ रखते हुए आप कहते हैं, ''अब वह अच्छी जगह पर है। वह परमेश्वर के साथ है।'' क्या ऐसे शब्द मृतकों की स्थिति के लिए धर्मशास्त्रीय वाक्य हैं? नहीं, उनसे केवल आपके इस विश्वास की झलक मिलती है कि यही जीवन सब कुछ नहीं है और परमेश्वर अपने लोगों को सम्भालता है।

कुरिन्थियों के नाम लिखते हुए, पौलुस ने कहा, ''हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं'' (2 कुरिन्थियों 5:8)। फिलिप्पियों के नाम अपनी पत्री में, इस प्रेरित ने कहा था कि मैं ''नहीं जानता, कि किस को चुनूं, क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि बहुत ही अच्छा है'' (फिलिप्पियों 1:22, 23)। क्या हम इन दोनों आयतों को पौलुस की इस घोषणा के रूप में लें कि यीशु की मृत्यु और जी उठने के बाद धर्मी मृतक सीधे स्वर्ग में जाते हैं? शायद, इसके बजाय हमें उन दोनों को समझौतावादी भाषा में[1] देखना चाहिए–जैसी भाषा का आज हम इस्तेमाल करते हैं।

कुछ ही समय पहले की बात है, मुझे ऐसे शिक्षकों तथा प्रचारकों का पता चला, जो यह विश्वास करते हैं कि इन दो आयतों का उद्देश्य मृतकों की स्थिति के बारे में नई शिक्षा का परिचय देना है। मैं मानता हूं कि मृतकों की स्थिति के बारे में मेरा ज्ञान सीमित है। यदि मैं इस विषय पर, जिसे आप नाजुक समझते हैं किसी पहलू को अच्छी तरह न बता पाऊं, तो आश्वस्त रहें कि मैंने ऐसा जानबूझ कर नहीं किया है।

मेरे पास जो सामग्री है, उसमें मुझे इस चर्चा में शामिल करने के लिए कई आयतें मिली हैं, जो मुझे लगता है कि इस विषय के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखती। एक नमूना इस प्रकार है।

इब्रानियों 2:14. कहा जाता है कि शैतान को यीशु के मरने से पहले अधोलोक के संसार पर पूरा अधिकार था। इसके सबूत के लिए इब्रानियों 2:14 का इस्तेमाल किया जाता है, जिसमें कहा गया है कि शैतान को ''मृत्यु पर शक्ति'' दी गई है। परन्तु इस आयत में

शैतान के अधोलोक पर किसी प्रकार के अधिकार की बात नहीं की गई। इसके बजाय यह कहती है कि शैतान को लोगों को मारने (मानवीय माध्यमों के द्वारा) की शक्ति मिली थी (और है)। शैतान को कभी भी वहां का नियन्त्रण नहीं दिया गया था, जहां उस (शैतान) के द्वारा देह को मारने के बाद देहहीन आत्मा जाती है।

मत्ती 12:24-29. जब यीशु पर बालज़बूल की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालने का आरोप लगाया गया तो अपने उत्तर के एक भाग के रूप में प्रभु ने कहा था, ''... कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल कैसे लूट सकता है, जब तक कि पहिले उस बलवन्त को बान्ध न ले? और तब वह उसका घर लूट लेगा'' (मत्ती 12:29)। यह दावा किया जाता है कि यह हवाला यीशु के अधोलोक में प्रवेश करने के बारे में है (''बलवन्त के घर'' में) जब उसकी मृत्यु हुई और वह धर्मी लोगों की आत्माओं (शैतान की ''सम्पत्ति'') को ले आया। इस काल्पनिक व्याख्या का संदर्भ से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह आयत दुष्टात्माओं को लोगों के जीवनों से निकालने की बात करती है[2] (मत्ती 12:24-29)।

इफिसियों 4:8. इस्तेमाल होने वाली एक और आयत इफिसियों 4:8 है, जो भजन संहिता 68:18 से ली गई है: ''वह ऊंचे पर चढ़ा और बंदियों को बांध ले गया और मनुष्यों को दान दिए।'' कुछ लोगों का दावा है कि ''बंदी'' धर्मी मृतकों को कहा गया है, जिन्हें शैतान द्वारा अधोलोक में बंदी बनाकर रखा गया, लेकिन यीशु के ऊपर उठाए जाने के समय उन्हें अधोलोक में से स्वर्ग में ले जाया गया था। परन्तु वचन में या संदर्भ में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इसकी ऐसी व्याख्या होनी चाहिए थी। किसी राजा के एक बड़ी विजय के बाद अपने गृहनगर में प्रवेश करने की कहानी का उदाहरण दिया जाता है (2 कुरिन्थियों 2:14-16 से तुलना करें)। ऐसे प्रदर्शन में ले जाए गए बंदी राजा के परास्त शत्रु होते थे। यह आयत नाटकीय ढंग से बताती है कि क्रूस पर यीशु ने अपने शत्रुओं को पराजित किया। इसलिए वह अपने लोगों को ''दान'' देने के योग्य था। संदर्भ में, ये जीवित मसीहियों को दिए जाने वाले आत्मिक दान (इफिसियों 4:7-13) हैं।

अन्तिम विश्लेषण में पहले बताई गई दो आयतें 2 कुरिन्थियों 5:8 और फिलिप्पियों 1:23 मुख्य प्रमाण लगती हैं।[3] मरने के बाद ''प्रभु के साथ'' और ''मसीह के पास'' होने की पौलुस की बातें मृतकों की मध्य अवस्था से मेल खाती हैं?[4] नया नियम सिखाता है कि *इस जीवन में भी* मसीही लोग ''मसीह के साथ'' हैं। यीशु ने कहा कि जहां दो या तीन उसका नाम लेने के लिए इकट्ठा होंगे, वह उनके बीच में होगा (मत्ती 18:20)। उसने प्रतिज्ञा की, ''मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:20)। मसीही लोगों के इस जीवन के सम्बन्ध में पौलुस ने प्रार्थना की, ''प्रभु तुम सब के साथ रहे'' (2 थिस्सलुनीकियों 3:16ख)। निश्चय ही, प्रभु का ''हमारे साथ'' होने का अर्थ यह नहीं है कि हम मर जाएंगे। वास्तव में ''प्रभु में मर'' जाने पर हमें उसके साथ और घनिष्ठ सम्बन्ध होने की उम्मीद करनी आवश्यक है (प्रकाशितवाक्य 14:13)।

इस पर विचार करो: यदि सभी नहीं, तो धर्मी मृतकों के सीधे स्वर्ग में जाने में विश्वास करने वाले अधिकतर लोगों का यह भी विश्वास है कि लूका 16:19-31 क्रूस से *पहले* के

मृतकों की स्थिति का यथार्थ वर्णन है। इसे ध्यान में रखते हुए, सभोपदेशक 12:7 देखें, जहां सुलैमान ने कहा है कि मृत्यु के समय, ''मिट्टी [शारीरिक देह] ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया, लौट जाएगी।'' 2 कुरिन्थियों 5:8 और फिलिप्पयों 1:23 पर लागू किया गया तर्क इस्तेमाल करने पर हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यीशु के क्रूस पर मरने से *पहले* भी, देहहीन आत्माएं सीधे स्वर्ग में (जहां परमेश्वर है) जाती थीं। यदि हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि सभोपदेशक 12:7 में समझौतावादी भाषा का इस्तेमाल किया गया, तो क्या हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल पौलुस द्वारा 2 कुरिन्थियों 5:8 तथा फिलिप्पियों 1:23 में किया जा सकता था?

जैसा कि प्रवचन में कहा गया है ''मृतक कहां हैं?'' इस विचार के लिए बड़ी आपत्ति है कि धर्मी लोग मरने पर सीधे स्वर्ग जाते हैं, जो अपने आप में न्याय के दिन की बाइबल की शिक्षा को नकारना है। किसी ने यह सुझाव देते हुए कि मसीह की वापसी के समय न्याय के दिन के बजाय, हर व्यक्ति मरने के समय ''न्याय के दिन'' का सामना करता है इस समस्या से बचने की कोशिश की है। कागज़ न्याय के दिन के बारे में विस्तृत अध्ययन करने की अनुमति नहीं देता, पर हम कुछ विशेष आयतों पर विचार करते हैं:

(1) बाइबल ''न्याय के दिन'' (मत्ती 10:15; 11:22, 24; 12:36; 2 पतरस 2:9; 3:7; 1 यूहन्ना 4:17) और ''उस भीषण दिन के न्याय'' (यहूदा 6) की बात कई जगह करती है। पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने ''एक दिन ठहराया है जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है'' (प्रेरितों 17:31)। यीशु ने इस विशेष दिन को ''अन्तिम दिन'' कहा (यूहन्ना 6:39, 40, 44, 54; 11:24; 12:48)।

(2) न्याय का दिन मसीह के ''अपनी महिमा में सब स्वर्गदूतों के साथ'' (मत्ती 25:31क) आने पर आरम्भ होगा। तब ''वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा'' (मत्ती 25:31ख)। मुर्दे जिलाए जाएंगे, चाहे वे अधर्मी हों या धर्मी (यूहन्ना 5:28, 29; देखें प्रकाशितवाक्य 20:13क)।

(3) सब लोग सिंहासन के सामने खड़े होंगे (प्रकाशितवाक्य 20:11, 12; देखें मत्ती 25:32क)[5] और सबका न्याय होगा (प्रकाशितवाक्य 20:12, 13)। इनमें धर्मी भी होंगे। मसीही लोगों के नाम लिखते हुए पौलुस ने कहा, ''हम *सब के सब* परमेश्वर के न्याय के सिंहासन के साम्हने खड़े होंगे'' (रोमियों 14:10)। उसने फिर लिखा, ''क्योंकि अवश्य है, कि हम *सब का* हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने *भले-बुरे* कामों का बदला, जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10)।

(4) जब लोग न्याय के उसके सिंहासन के सामने खड़े होंगे, तो ...

> ''... जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही [यीशु] उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा। और वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा। तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि

से तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है। ... तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, हे शापित लोगो, मेरे साम्हने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। ... ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे'' (मत्ती 25:32-46; देखें प्रकाशितवाक्य 20:15; 21:1-4)।

आप और मैं मृतकों की अवस्था से असहमत हो सकते हैं, परन्तु मुझे आशा है कि एक बड़ा न्याय का दिन होगा। ''इस पृथ्वी पर जीवन उस बड़ी घटना की ओर ले जा रहा है।''

''मृतक कहां हैं ?'' प्रवचन में मैंने माना है कि यह प्रश्न प्रस्तुत किए गए विचार के बारे में पूछा जा सकता है: ''क्योंकि लूका 16 न्याय के दिन से पहले के उद्धार पाए और खोए हुए लोगों के एक विभाजन को दिखाता है, तो न्याय के दिन का क्या औचित्य है ?'' उस प्रवचन में कहीं और मैंने कई सम्भावनाओं का सुझाव दिया है, जिनमें से दो ये हैं: न्याय के दिन का मुख्य उद्देश्य ''निर्दोष या दोषी ठहराने की इतनी बात नहीं है, क्योंकि यह तो न्याय और दण्ड देने को दिखाने की बात है।''[6] यह भी हो सकता है कि देह रहित आत्मा की सुखद या दुखद स्थिति प्रत्येक व्यक्ति के अपने उद्धार की स्थिति के बारे में सही ज्ञान लेकर शारीरिक देह के बंधनों से छूटना है। मध्य अवस्था में विश्वास से जितनी भी दुविधाएं आएं, मेरा मानना है कि सीधे स्वर्ग में जाने की स्थिति के सामने उन समस्याओं की तुलना करना बहुत छोटी बात है। इस स्थिति को समझने पर यह दावा किया जाता है कि आत्मा स्वर्ग में चली जाएगी, थोड़ी देर बाद उसे स्वर्ग से न्याय के सिंहासन पर प्रकट होने पर बुलाया जाएगा,[7] और फिर वह वहां लौट जाएगी, जहां पहले थी।

अन्त में, मैं फिर मानता हूं कि यह उन दो विषयों में से एक है, जिसे मैं इस शरीर में रहते हुए पूरी तरह से नहीं समझ सकता। जब मैं मृत्यु में अपनी आंखें बन्द करता हूं, तो मैं उन्हें स्वर्गलोक में पिता की गोद में खोलता हूं, मैं भयभीत हो जाता हूं। यदि मैं अपनी बाहें स्वर्ग में यीशु के लिए खोलता हूं, तो मैं निराश नहीं हो जाता। वास्तव में आप मेरी धन्यवाद की महिमा सुनेंगे! महत्वपूर्ण बात यह है कि आप और मैं दोनों मिलकर मरने के लिए तैयार हों ताकि हमारी आत्माएं जहां भी जाएं, ''हम प्रभु के साथ हों''! आमीन और आमीन।

टिप्पणियां

[1]''समझौता'' का एक अर्थ ''को मान लेना'' है। समझौतावादी भाषा वर्तमान में इस्तेमाल होने वाला ''को मान लिया'' शब्द है। [2]''मसीह का जीवन, भाग 2'' में ''एक व्यस्त दिन'' पाठ में मत्ती 12:29 पर संक्षिप्त टिप्पणियां देखें। [3]इस लेख तथा ''मृतक कहां हैं ?'' प्रवचन में थोड़ी बहुत समानता है परन्तु एक में दिए गए तर्क दूसरे में नहीं हैं। इस विषय पर पूरी चर्चा के लिए, दोनों को देखें। [4]परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने वाले कई बार ऐसी बातें कहते थे, जो ऊपर से विरोधाभासी लगती थी। आम तौर पर वे उन बातों को मिलाने का कोई प्रयास नहीं करते थे या बहुत कम करते थे। दोनों बातें सच होती थीं और वे उसे ऐसे ही छोड़ देते थे। किसी कारण, पश्चिमी लोगों का दिमाग तब तक आराम से नहीं बैठ सकता, जब तक ऐसी बातों को मिलने का कोई प्रयास न करे। [5]कुछ लोग यह कहकर कि यह अस्थाई घटनाओं की बात है मत्ती 25 और

प्रकाशितवाक्य 20 की शिक्षा को कम करने की कोशिश करते हैं।[6]डेविड रोपर, ''व्हेन द बुक्स वर ओपन्ड'' (ट्रैक्ट) (पैसाडिना, टैक्सस: हाउन पब्लिशिंग कं., पृष्ठ नहीं, 9)।[7]जैसा कि पहले कहा गया था, कुछ लोग यह इनकार करके कि सब लोगों के न्याय के समय एक बड़ा दिन होगा, इस दृश्य को मिटाने की कोशिश करते हैं, पर मेरा मानना है कि बाइबल न्याय के दिन के विषय पर बिल्कुल स्पष्ट है।